शेख़ फ़रीद – सबद ६४

फरीदा काले मैडे कपड़े काला मैडा वेसु ॥

सलोक, सेख फरीद, गुरु ग्रंथ साहिब, १३८१

फरीदा काले मैडे कपड़े काला मैडा वेसु ॥
गुनही भरिआ मै फिरा लोकु कहै दरवेसु ॥६१॥

सार: हमारे बाहरी रूप और वास्तविक आंतरिक स्थिति के बीच अक्सर बड़ा अंतर हो सकता है। इज़्ज़त-शोहरत अक्सर बाहरी दिखावे और उन चीज़ों पर आधारित होती है जिन्हें समाज से स्वीकृति मिलती है। भीतरी ईमानदारी पैदा करना, धीरे-धीरे चलने वाली प्रक्रिया है जिसमें हमें अपने इरादों, डर और छोटे समझौतों का सामना करना पड़ता है। जहाँ समाज आसानी से बाहरी दिखावे को अहमियत दे सकता है, वहीं हमारी अंतरात्मा हमसे गहरी सोच-विचार की माँग करती है, यह हमें उकसाती है कि हम अपने बाहरी रूप को अंदरूनी सच्चाई से जोड़ें। इस सामंजस्य को बिठाने से यह फ़ासला कम हो जाता है और इसके नतीजे में हमें गहन शांति और स्थिरता का एहसास होता है।

फरीदा काले मैडे कपड़े काला मैडा वेसु ॥
फ़रीद कहते हैं कि मेरे कपड़े काले हैं और मेरा काला पहनावा मेरी नकारात्मकता को छुपा रहा है। यह प्रतीक है कि यदि बाहरी रूप एक पोशाक बन जाए तब यह अहंकार को नष्ट करने के बजाय उसकी रक्षा करता है, हम पवित्र प्रतीत होते हैं जबकि हम वास्तव में होते नहीं।

गुनही भरिआ मै फिरा लोकु कहै दरवेसु ॥६१॥
मैं नकारात्मकता और अज्ञान से भरा हुआ भटकता रहता हूँ फिर भी, लोग मुझे पवित्र कहते हैं। यह विडंबना दर्शाती है कि कैसे बाहरी दिखावट और सामाजिक स्वीकृति, हमारे द्वारा प्रस्तुत की जाने वाली वास्तविकता और हमारे वास्तविक स्वरूप को धुंधला कर सकती है। (६१)

तत्त्व: शेख़ फ़रीद चेतावनी देते हैं कि सामाजिक स्वीकृति की चाहत हमें स्वयं का ऐसा रूप गढ़ने के लिए प्रेरित कर सकती है जो स्वीकृति चाहता है जिससे हमारा वास्तविक स्वरूप उपेक्षित हो सकता है। हम अक्सर सामाजिक अपेक्षाओं को पूरा करने के लिए मुखौटे बना कर अपनी वास्तविक पहचान को छुपाते हैं। जो प्रशंसा दिलाता है वह हमारी सच्ची भावनाओं को प्रतिबिंबित नहीं कर सकता। इस मुखौटे को बनाए रखना थकाता है जबकि भीतर के सत्य को अपनाना क्षणिक प्रशंसा से कहीं अधिक, वास्तविक संतुष्टि प्रदान करता है।

सबद व्याख्या **विनइंदर कौर** और **अमरदीप सिंह**

Oneness In Diversity Research Foundation

वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com